कम्बा पिट्ठा

मुसन्निफ़ा

पण्डित त्रिभुवन नाथ साहिब
सपरू हिज़ मुतरज्जिम अदा-
लत साहिब जुडीशियल
कमिश्नर बहादुर
अवध ॥

लखनऊ

मुन्शी गंगा प्रसाद वर्मा व ब्रादरान यन्त्रालय में छापी गया

कच्चा चिट्ठा

अदावत के श्वाले को भडकाने वालो जिहालत की ज़ञ्जीर खडकाने वालो
दिलों को ज़ईफ़ों के धडकाने वालो नया रोज़ यक जोड फडकाने वालो
यह क्या नित नई शोबिदे बाज़ियां हैं ॥
यह क्या क़ौम में रख़नः अन्दाज़ियां हैं ॥ १
अदावत का यह बीज क्यों तुमने बोया? यह क्यों तुम हुए अपनी ख़्वारी के जोया?
यह क्यों तुमने एज़ाज़ ज़ाती को खोया? यह क्यों क़ौम का नाम तुमने डूबोया?
हुई सब को मालूम आदत तुम्हारी ।॥
मिली ख़ाक में सब शराफ़त तुम्हारी ।॥ २
तुम्हें नशय माल व दौलत ने खोया। रियासत ने खोया वकालत ने खोया
तुम्हें उज्ब व पिन्दार व नख़वत ने खोया तुम्हें क़ौम की चौधरायत ने खोया ॥
भला क़ौम में फूट क्यों तुम ने डाली ॥
कहां की यह मरजाद तुम ने निकाली । ३
बिवस्था हर यक जा से पहिले मंगाई। गुरूजी के हाथों प्रायश्चत कराई ॥
शहादत से जब हो चुकी कुल सफ़ाई कोई बात लामज़हबी की न पाई ॥
बिशुन जी को तब भाईयों ने मिलाया
ख़ुशी से उन्हे साथ अपने खिलाया। ४
तुम्हें पहिलेही से थी वद एतक़ादी॥ तुम्हारी तबीअत थी झगडे की आदी
जो तुम में थे पल्ले सिरे के फ़सादी॥ उन्हों ने यह हरसू मनादी फिरादी ॥

सभा की तरफ़ जो हैं वह दाख़िली हैं ॥
म्वाफ़िक़ बिशुनजी के कुल ख़ारिजी है। ५॥
यह क्यों तुफ़रक़ा क़ौम का तुमको भाया कि अख़राज का तुमने महज़र बनाया ॥
यह क्यों हर जगह गश्त उसको कराया भला ऐसी चालों से क्या तुम ने पाया ॥
उन्हीं को पसन्द आई तायत तुम्हारी
नहीं जान्ते थे जो हिकमत तुम्हारी। ६॥
अगर लखनऊ में तुम्हीं बाख़ुदा थे। बडे पाक तीनत बडे पारसा थे ॥ ॥ ॥
अगर क़ौम में तुमही धर्मात्मा थे। बडे पाक बातिन बडे बासफ़ा थे ॥ ॥
तो बेहतर था घर बार सब त्याग देते
चले जाते काशी में सन्यास लेते । ७॥
तुम्हारे दिलों में तो कीना भरा था। तुम्हें तो दर अन्दाज़ियों का मज़ा था ॥
तुम्हें तो हकूमत का चसका पडा था तुम्हारा तो कुछ और ही मुद्दआ था ॥
अगर सिख़ औरों के ख़ामोश रहते ।
तो फिर क़ौम के चौधरी कौन बन्ते । ८॥
यह क्यों तुमने झन्डे पःदीं को चढाया? यह क्यों क़ौम को तुमने नक्कू बनाया।
दबाग़ित का क्यों तुमने डंका वजाया? यह क्यों सोते फ़ितने को तुमने जगाया।
समझ बूझ कर क्यों बने तुम अनारी?
कि ख़ुद पांव में अपने मारी कुल्हारी। ९॥
मुहब्बत के रिश्ते को क्यों तुमने तोडा? शरारत से क्यों बाप बेटों को फोडा?॥
यह कयों भाई बहिनों से मुहं तुमने मारा? अज़ीज़ों को काटा क़रीबों को छोडा।
न कुछ जोश ख़ूं का किया पास तुमने
किया अपना घर सत्तियानास तुम ने। १०॥

यह क्यों तुमने शौहर से ज़ौजा छुडाई? जुदा क्यों किये तुमने भाई से भाई?
यगानों को क्यों तुमने सूखी सुनाई? पता क्यों अज़ीज़ों को तुम ने बताई?
जले दिल के गो तुमने फोडे फफोले।
जिये तुम तो क्या धर्म में तोढे निगोडे। ११॥

किया क़ौम को अपनी बदनाम तुमने मज़ामी किये फ़ोहिश इरक़ाम तुमने
मुआयब किये तश्त अज़ बाम तुमने किये वाह क्या धर्म के काम तुमने।
हकीमाना तुम को ख़मोशी थी वाजिब।
तुम्हें क़ौम की पर्दापोशी थी वाजिब। १२॥

अनोखे हुए धर्म के तुमही बानी॥ तुम्हीं पर हुई ख़त्म सब नुकता दानी
तुम्हीं को मिली क़ौम की पासबानी तुम्हीं को मिली क़ौम की हुक्मरानी
तुम्हें चौधरी कोई माने न माने।॥।
रियासत है बख़शी तुम्हीं को ख़ुदा ने। १३॥

जो इस धर्म की पहिले आई थी शामत हर यक सू बुपा होगई थी क़ियामत
जो पहिले थी इस क़ौम पर आई आफ़त वह सब आपही की थी शफ़क़त इनायत
ज़माने के नैरंग पहिचान्ते हैं।॥।
पसे परदा है कौन हम जान्ते हैं। १४॥

भला याद है तुम को वह भी ज़माना कलब की कहानी कलब का फ़िसाना
विशुनजी हुए जब थे लन्दन रवाना जब अग़वा का ढूंढा था तुमने बहाना
खुली जब तुम्हारी थी ज़ाती अदावत।
उठाना पडी थी तुम्हीं जब नदामत। १५॥

नया उज़्रगुला जब उठाया था तुमने। कलब घर को हव्वा बनाया था तुमने
दिया क़ौम को जब कि धोखा था तुमने धर्मजाल में जबकि फांसा था तुमने

है आंखों तले कुल तमाशा तुम्हारा
वह सब आड में धर्म के जो हुआ था १६

जब यक मरतबा चख चुके तुम हलावत जब यक मरतबा मिल चुकी तुमको लज़्ज़त
जब यक मरतबा खो चुके अपनी इज़्ज़त जब यक मरतबा हो चुकी तुमको ख़िफ़्फ़त
न बाज़ आवो अबभी तो शामत तुम्हारी
न मानो हमें क्या है क़िसमत तुम्हारी। १७॥

अगर तुम थे सब पैरवाने शरीयत अगर तुम थे सब सालिकाने तरीक़त
अगर तुम थे सब वाक़िफ़ाने हक़ीक़त अगर तुम थे सब नेक व पाकीज़ा तीनत
तो रिषियों के अक़वाल को मानना था
उन्हें हादी व रहनुमा जानना था। १८

कलब वालों से जो कि थी यक अदावत न कश्मीर व काशी की की तुमने वक़अत
न पूछी की समझे ज़रा भी हक़ीक़त न की तुमने मुतलक़ मनुजी की इज़्ज़त।
म्वाफ़िक़ न सूझी मनाफ़िक़ ही सूझी।
व्यवस्था उठालाय एक माधवी की। १९॥

यही पाराशर माधवी ने लिखा है॥ कि "कलयुग में बहरी सफ़र नारवा है"।
अगर मुरतकिब कोई इसका हुआ है" "करे क़ौम तर्क उसको येही सज़ा है"
जो इस अम्र में हुक्म थे पेशतर के।
हुए वह न मन्सूख़ व मतरूक इससे। २०॥

सुनें जो हुए धर्म के अब हैं बानी। उसी माधवी का यह है क़ौल सानी।
"जो कलयुग में होवे शराबी व ज़ानी" "नहीं उससे जायज़ प्रायश्चित करानी।
"खिलाना नहीं क़ौम में उसका जायज़
मिलाना नहीं क़ौम में उसका जायज़

मुफ़ीद अपने जितना था तुमने छपाया मुज़िर था जो अपने वह तुमने छिपाया
यह क्यों क़ौम को तुमने बुत्ता बताया व्यवस्था का क्यों एक पहलू दिखाया
जो चलते हो मरजाद पर तो बजा है
बढा वेद से रुतबा मरजाद का है ॥ २२॥

जहाज़ो पर चढ कर जगन्नाथ जाना वहां साथ ग़ैरों के खाना उडाना ॥ ।
शराबों के कन्टर के कन्टर लुढाना। तवायफ़ से मुंह वक़्त सुहबत मिलाना
हुआ सब यह मरजाद ही के धर्म से ।
यह क़ैदें छुटीं सब इसी करम से । २३

धर्म पत्रका में यह तुमने लिखा है। सभावालों को भी यह कहते सुना है।
असूल एक तुमने यह क़ायम किया है कि मरजाद पर सब को चलना रवा है।
असूल अब कहां वह किया था जो जारी
कहां है वह मरजाद क़ौमी तुम्हारी। २४

बुज़ुरगों की मरज़ाद क्यों तुमने तोडी? तास्सुब से क्यों धर्म की राह छोडी?॥
सिदाक़त की क्यों तुमने गरदन मरोडी यह क्यों तुमने इन्साफ़ की आंख फोडी
हवाला व्यवस्था का देना लचर है
बुज़ुरगों की मरजाद बहरीसफ़र है। २५॥

रजनत का क्या अब है तुम पर छाया नहूसत का क्या पडगया तुम पर साया
श्री कृष्णा को क्यों सभा में मिलाया विशुनजी के था साथ कल जिसने खाया
यही ना कि सब जज का दामाद था वह
विशुन नाथ हंडू का दिलशाद था वह। २६

सभा में यह अन्धेर कैसा मचाया। भला धर्म में कैसा अपना पराया ॥
यह क्यों मुरलीधर कौन तुमने मिलाया यह क्यों देलीवालों को नीचा दिखाया

व्यवस्था तो लेदे के की बाद हासिल ॥ ।
श्री कृष्णा को क्यों किया पहिले शामिल। २७॥

यह उम्मत बढाने की क्या तुम को सूझी यह सब सरगियों की प्राश्चित है कैसी
व्यवस्था मसे भूल तुम वेद जी की ॥ भला करते क्या कोर अपनी दबी थी।
तुम्हें क़ौम की गर है ज़िल्लत गवारा
चुनीं धर्म वाज़िब मुबारक शुमारा। २८॥

प्राश्चित की तौक़ीर तुमने घठाई ॥ ख़ुद ही धर्म की तुमने इज़्ज़त मिटाई
यह ख़ुद ग़रज़ी से अक़्ल क्यों सटपटाई कहां वह गई अब तुम्हारी ढिठाई ॥
सभा को किया है फ़भरभंड तुमने ।
मचाया अबस इतना पाखंड तुमने। २९

जो ज़ाहिर में मिलते तो क्या थी बुराई न होती तुम्हारी कभी जग हंसाई ॥
दिलों में जो होती तुम्हारे सफ़ाई ॥ न झगडा था कोई न कोई लडाई।
मसल तुम पः सादिक़ हुई भाई मेरे ।
कि गुड खावें परहेज़ है गुलगुलों से। ३०॥

जो दुशमन कलब वालों को जान्ते हो दिली दुशमनी उनसे गर मान्ते हो
तो फिर धर्म का जाल क्यों तान्ते हो तुम औरों को साथ अपने क्यों सान्ते हो
धर्म उस जगह है जहां आश्ती है।
उधर होंगे हम सब जिधर रास्ती है। ३१॥

तुम्हारे हुए हथखंडे सब पः ज़ाहिर हुए क़ौम के लोग सब तुमसे माहिर
जो ख़िदमत को थे धर्म की दिलसे हाज़िर खुला शोबदे बाज़ी उनपर पः आख़िर
जो की जो फ़रोशों ने गन्दुम नुमाई।
तो घर की बिज़ायत भी अपने गंवाई। ३२॥

जिहालत नहोती सभाभी न होती। हिमाक़त न होती सभा भी न होती।
अदावत नहोती सभाभी न होती। रियासत न होती सभाभी न होती।
वजूदे सभा के अनासिर यही हैं।
अराकीं सभा के बज़ाहिर यही हैं। ३३
सभा लखनऊ में नचाया करो तुम विशुनपद खडे होके गाया करो तुम
दुतारा धरम का बजाया करो तुम नया रोज़ यक स्वांग लाया करो तुम
छकित हो गये पाके दरशन तुम्हारा
खुला सब पः बहुरूपिया पन तुम्हारा। ३४॥
अजब पाक यह ख़ित्तये लखनऊ है जिसे देखिये क़ौमही का अदू है॥
बढे फूट क्योंकर यही जुस्तजू है यही बातचीत और यही गुफ़्तगू है
ख़राबी पः हर शख़्स अपनी तुला है
ख़सूमत का हर सिम्त दरवा खुला है। ३५॥
सितम क़ौम पर इस सभाने है ढाया इसीने यह शोरोशग़ब है मचाया॥
इसीने यह तूफ़ान झूठा उठाया॥ इसीने यह रोज़े नहूसत दिखाया॥
यह कीं हरकतें लाबवाली इसी ने।
हरयक घर में है फूठ डाली इसी ने। ३६॥
फ़क़त पांच ही इस सभा के हैं बानी सुनाते हैं जो क़ौम को लनतरानी।
धर्म इन का है भुस में चिंगी लगानी है आदत में इन सब के ईज़ा रसानी
हैं पंज ऐब पर सब से सब बरी हैं॥
यही क़ौम के आजकल चौधरी हैं। ३७
इन्हीं की है दुन्या में साहब क़िरानी इन्हीं की है कुल क़ौम पर हुक्मरानी
यही करते हैं धर्म की निगहबानी। यही करते हैं क़ौम की [illegible]॥

जिसे चाहें ख़ारिज करें या कि दाख़िल।
इन्हीं को हैं कुल इख़्तयारात हासिल। ३८॥
इन्हीं की यह बेजा सख़ुन साज़ियां हैं इन्हीं की यह सब शोबिदेबाज़ियां हैं
इन्हीं की यह कुल फ़ितनःपरदाज़ियां हैं इन्हीं की यह सब रख़नःअन्दाज़ियां हैं
जुदाई का चिहरा दिखाया इन्हीं ने
तबाही का नक़शा जमाया इन्हीं ने। ३९
करे कोई फ़रयाद इनकी बला से॥ कोई होवे नाशाद इनकी बला से।
कोई होवे बरबाद इनकी बला से॥ किसी पर हो बेदाद इनकी बला से।
इन्हें क्या है इनको हकूमत से मतलब।
अदावत से मतलब ख़सूमत से मतलब। ४०॥
यह शेवा है अपना बनाया इन्हों ने॥ बला बोग़मा जो कि पाया इन्हों ने।
वहीं हाशिया एक चढाया इन्हों ने॥ धर्म पत्र का में छपाया इन्हों ने।
लिखे झूठ गर उसको सच जान्ते हैं॥
लिखे सच अगर झूठ उसे मान्ते हैं। ४१॥
दिमाग़ों में इनके कुछ ऐसी चढी है। ख़ुदी इस क़दर इनके दिल में भरी है
बिशुन जी के जानिब जो कोई जरी है वह फिर फ़ासिक़ व मुफ़सिद व मुर्तद्
यही एक बेसब ज़ाते ख़ुदा हैं॥
यही धर्म अवतार धर्मात्मा हैं। ४२॥
वली ख़ंगर इनके जो हैं धर्म सूरत। जिन्हें क़ौम से अपनी है एक अदावत
निकाली यह हज़रत ने बिदअत की सूरत कि देते हैं अख़बार वालों को उजरत
मुख़ालिफ़ वह मज़मून छापें छपावें।
जहां तक बने क़ौम को वह बनावें। ४३

हमें क्या जो वह रुपया यों उड़ायें हमें क्या रियासत जो अपनी लुटायें ॥
हमें क्या जो ख़ुद बिगड़ें हमको बनायें हमें क्या सभा को रखें या मिटायें।
अगर ग़म है तज़हीक क़ौमी का ग़म है
अलम है हमें गर तो इसका अलम है ।४४॥

सभा ने यह हैं क़ायदे अब बनाए यह हैं क़ौम पर अपने सिक्के जमाये
न हुक़्क़ा पिये कोई नहि पान खाये अज़ीज़ अपना ख़ुद घर में आये नजाये
बहू है तो मैके में आना है मुशकिल
है बेटी तो ससुराल जाना है मुशकिल ।४५॥

मेरे शहर देहली के ताबिन्दा अख़्तर मेरे शहर देहली के सच्चे ब्रादर ॥।
ज़रा देखो यां लखनऊ में तो आकर तुम्हारे बने कौन हादी व रहबर॥।
करो आ के इनसाफ़ ख़ुद मुनसिफ़ाना
मुनासिब नहीं वक़्त पर मुंह छिपाना। ४६

नहीं तुम को इस दम ख़मोशी रवा है नहीं तुम को अब चश्मपोशी रवा है
तुम्हें क़ौम की ख़ैर कोशी रवा है। तुम्हें क़ौम पर सरफ़रोशी रवा है।
तुम्हें रास्ती का है काफ़ी सहारा ॥
विचारी सभा क्या करेगी तुम्हारा । ४७॥

नहीं तुम को वाजिब सभा की अतायत नहीं छोड़नी तुम को लाज़िम शुजाअत
मुनासिब तुम्हें क़ौम की है रिफ़ाक़त कि क़ौमी रिफ़ाक़त है बाबे सआदत
रहे हक़ में सर से गुज़रना है बेहतर ।
ख़ुदा दे जो हिम्मत तो मरना है बेहतर। ४८

नहीं हो अगर तुम जफ़ाकार भाई। नहीं हो अगर तुम दिल आज़ार भाई
अगर तुम हो पक्के वफ़ादार भाई। अगर तुम हो सच्चे मददगार भाई

मुनासिब है यह तफ़रक़ा दूर होवे ।
यह क़ौमी बला जल्द काफ़ूर होवे । ४९॥

वह पंजाब के ख़न्दः रूयों को देखो। वह पंजाब की गुफ़्तगूयों को देखो।
वह पंजाब के नेक ख़ोयों को देखो। वह पंजाब के सुलहजोयों को देखो।
कि कैसे हैं पक्के मददगार क़ौमी ।
कि कैसे हैं सच्चे वह ग़मख़्वार क़ौमी । ५०॥

वह असहाब पंजाब पाकीज़ः तीनत कि जिनके दिलों में भरी है मुहब्बत
जिन्हें दिल से है क़ौम का पास इज़्ज़त जो रखते नहीं भाईयों से कदूरत॥
सदर का यही लेके पैग़ाम आये ।
यही वक़्त पर क़ौम के काम आये । ५१॥

मेरे हाजते क़ौम बरलाने वालो! मुसीबत में लोगों के काम आने वालो।
मेरे हुब्ब क़ौमी के दिखलाने वालो! मेरे सुलह की राह बतलाने वालो।
चलो वक़्त इमदाद भाई यही है।
बढ़ो! वक़्त मुशकिल कुशाई यही है। ५२॥

हुआ क़ौम पर फिर नहूसत का फेरा तअस्सुब ने फिर आके डाला है डेरा
जिहालत का फिर छा रहा है अन्धेरा मुसीबत ने फिर क़ौम को आके घेरा
जमाअत प फिर आ गई है तबाही ।
जुदा हो गये फिर हैं भाई से भाई । ५३॥

हर एक क़ौम में सैद रंजो मिहन है न वह सुहबतें हैं न वह अनजुमन है
बदी पर फिर इस साल चरख़े कोहन है न है जोश क़ौमी न हुब्बे वतन है
मुहब्बत है बाक़ी न उलफ़त है बाक़ी ।
पड़ी क़ौम में फिर है नाइत्तफ़ाक़ी ५४

मदद ! क़ौमवालो कि वक़्त मदद है तुम्हारे अज़ीज़ों पः फिर वक़्त बद है।
तुम्हें दस्तगीरी में क्या रद व कद है न कीना है तुम को न बुज़्ज़ो हसद है
ग़ज़ब आफ़त सर पर आई हुई है
बलायें घटा टोप छाई हुई हैं ।५५॥

मदद ! किश्ती ये क़ौम की जा रही है जिहालत की मौजों से भिड़ा रही है
तअस्सुब के टीलों से टकरा रही है भंवर में अदावत के चकरा रही है
मुहब्बत के पतवार से हां संभालो !
तमअ्मत के गिरदाब से हां निकालो ! ५६॥

यही क़ौम से हिज्र की इलतिजा है कि देखे वह सच क्या है और झूठ क्या है
कुल इस कच्चे चिट्ठे का यह मुद्दा है कि धोखे की टट्टी ग़ारत गर सभा है
फ़क़त बात की पछ ने आफ़त यह ढाई ।
हर यक घर में नाहक़ यह बस चख़ मचाई।५७॥

राक़िम

इस धोखे की टट्टी को अगर कोई हटा दे ॥
खुल जाय तिलसमात अभी धर्म सभा का
